(6) अमरुक शतक – शृंगार प्रधान मुक्तक काव्यों में अमरुक शतक का बहुत ऊँचा स्थान है। इसकी विभिन्न प्रतिलिपियों में पद्य संख्या 90 से 115 तक मिलती हैं जिनमें प्रायः 51 पद्य सभी में समान रूप से हैं। इसकी प्राचीनतम टीका अर्जुनवर्मदेव की रसिकसंजीवनी है, जिसमें केवल 102 पद्य ही हैं। इसका समय 1215 ई० के आस-पास माना जाता है।

विषय-वस्तु की दृष्टि से अमरु शतक दाम्पत्य-प्रेम के सरस और आवेगपूर्ण भावों की मधुर अभिव्यक्ति है। अमरु की भाषा सरल तथा सरस है। अंग्रेजी तथा जर्मन कवियों ने अमरुशतक के छन्दों के अपने-अपने ढंग से स्वतंत्र रूपान्तर किए हैं।

(7) बिल्हण – चौरपञ्चाशिका – यह बसन्ततिलका छन्द में रचित पचास पद्यों का काव्य है। इस काव्य के दो संस्करण मिलते हैं, जिनमें बहुत अन्तर है। इसका प्रत्येक पद्य 'अद्यापि' शब्द से प्रारंभ होता है। इन पद्यों में किसी राजकुमारी के साथ अपनी प्रणयलीला का कवि ने प्रभावशाली और मर्मस्पर्शी वर्णन किया है। किन्तु बिल्हण ने अपने महाकाव्य (वर्णन) के अन्त में जो आत्मकथा लिखी है उससे यह प्रकाश नहीं पड़ता कि किसी राजकुमारी से उन्होंने प्रेम-विवाह किया था। यह कल्पित कथानक काव्यात्मक होने के कारण बहुत मार्मिक है।

(8) जयदेव का गीतगोविन्द – 'गीतगोविन्द' संस्कृत भाषा का श्रेष्ठ गीतिकाव्य है। इसमें 12 सर्ग हैं जो पुनः 24 प्रबन्धों में विभक्त है। मिथिला और उत्कल के विद्वानों ने अपने क्षेत्रों में इनकी स्थिति बतायी है।

इसके 12 सर्गों में क्रमशः श्रीकृष्ण की गोपियों

के साथ रासक्रीड़ा, राधा का विषाद, कृष्ण के लिए व्याकुलता उपालम्भ, कृष्ण की राधा के लिए उत्कण्ठा, राधा की सखी के द्वारा राधा के विरह सन्ताप का वर्णन, कृष्ण का आगमन, राधा का कोप-प्रकाशन, कृष्ण का संगीत और राधा से मिलन का निरूपण है।

ये पाठ्य पद्य हैं जिन्हें सस्वर पढ़ा जाता है। इस प्रकार गीत-गोविन्द में गेय और पाठ्य अंशों का समन्वय है। इसके प्रथम सर्ग के आरंभ में दशावतार-स्तोत्र है जो इस काव्य को धार्मिक रूप प्रदान करता है। इसकी प्रथम कड़ी में 'मीनावतार' की प्रार्थना है -

'प्रलय-पयोधि-जले धृतवानसि वेदम्।
विहित-वहित्र-चरित्रमखेदम्।
केशव! धृतमीन शरीर! जय जगदीश हरे॥1॥

'गीतगोविन्द' संस्कृत-भाषा में एक नूतन साहित्य-प्रकार को लेकर आया। जयदेव ने इसे सर्गों में विभक्त कर प्रबन्ध-काव्य का ही रूप दिया था।

गीतगोविन्द की रचना का स्वरूप और उद्देश्य जयदेव ने निम्नांकित पद्य में स्पष्ट कर दिया है -

'यदि हरि स्मरणे सरसं मनो, यदि विलास-कलासु कुतूहलम्। मधुरकोमलकान्तपदावलीं, शृणु तदा जयदेवसरस्वतीम्॥

अर्थात हरि-कीर्तन के साथ रासलीला की रमणीयता, कोमल कान्तपदावली का माधुर्य - ये दोनों जयदेव की वाणी के अमर उपादान हैं।

Uma Pandey
Skt.-Deptt.
B.A. I st yr

Scanned with CamScanner